विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (XII)

करीब-करीब सभी साथ स्कूल पहुँचे होंगे। परन्तु यह साथ पहुँचना ऐसा था कि इसमें जो पीछे था वह हमेशा पीछे नहीं था। वह आगे भी हो जाता। जो आगे था वह हमेशा आगे नहीं था पीछे भी हो जाता। बस्ती के स्कूल का रास्ता आधे घण्टे का था परन्तु बच्चों ने रास्ता लगातार सीधे स्कूल की दिशा में न चलकर दाएँ, बाएँ, पीछे और बोलू - कूना ने हवा में उड़कर भी काटा। कूना को हवा में उड़ना याद नहीं था। बच्चे कभी सपने बात करते तो कूना सपना क्या होता है पूछती। उसने सपना कभी नहीं देखा। देखा भी हो तो उसे याद नहीं रहता। बीनू यदि कहता, "आज मैंने एक सपना देखा।" तब कूना कहती, "मुझे भी सपना दिखाओ।" "मैं कैसे दिखाऊँगा।" बीनू ने कहा।" तुमको चना खाने को दिया था, वह मेरा चना था।" कूना कहती । फिर बोलू समझाते हुए कहता, "सपना खुद देखना पड़ता है।" तब कूना कहती, "मैं भी खुद देखूँगी। तुम मत देखना।" तब बोलू कहता, "तुम देख लेती हो और भूल जाती हो।" "मैं नहीं भूलती। गुरूजी कहते हैं मेरी स्मरण शक्ति अच्छी है। तुम लोग सपना देखते रहते हो मैंने एक बार भी नहीं देखा।" यह कह कूना रूठ जाती।

बैलों और गायों को स्कूल के किनारे लगे पेड़ों से बाँध दिया गया था। एक गाय बिलकुल डाल की तरह पतले पेड़ से बँधी थी। हल्का-सा खिंचाव गाय को बँधा होने का आभास देता उससे ज़्यादा गाय खींचती नहीं थी इसलिए पेड़ के टूटने का डर नहीं था।

गाय, बैलों के सामने पैरा डाल दिया गया था। कूना का घोड़ा आने-जाने वालों से बिचककर कूदता-दौड़ता था। कूना के चाचा ने उसे भी बाँध दिया था।

गुरूजी चाहते थे कि बड़ी उम्र के लोग और बच्चे कक्षा के अन्दर सोएँ। सुरक्षा के लिए युवा बरामदे में सोएँ। कक्षा के दरवाज़े सोने से पहले अन्दर से बन्द कर लिए जाएँ। कक्षा के बाहर के दरवाज़े बाहर से बन्द हो जाते थे पर मालूम हुआ कि अधिकाँश दरवाज़े अन्दर से बन्द नहीं होते। कक्षा में अन्दर सिटकनी लगाने का कोई औचित्य नहीं था। पर अन्दर सिटकनी क्यों लगी होगी? क्या ऐसा सोचा गया था कि घण्टी बजने के बाद दरवाज़े को अन्दर से बन्द कर लें ताकि देर से आने वाले विद्यार्थी चुपके से घुस न जाएँ। इस कारण से तो सिटकनी नहीं लगाई गई होगी। क्योंकि समय के पहले विद्यार्थी स्कूल आ जाते थे। और दरवाज़ा खुलने का रास्ता देखते थे। कुछ बच्चे जो पहले आकर पढ़ना चाहते वे चौकीदार के घर जाकर दरवाज़ा खोलने का अनुरोध करते। चौकीदार एक दो कक्षाएँ खोल देता। कमरे के अन्दर बरसात, गरमी में आराम रहता था। जाड़े में बच्चे बरामदे की धूप में बैठकर पढ़ते। अधिकतर बच्चे मैदान में खेलने के लिए जल्दी आते। स्कूल की घण्टी बजते ही सब बच्चे दौड़ते हुए प्रार्थना की जगह इकट्ठे हो जाते। खिड़कियों में सिटकनी हमेशा अन्दर की तरफ लगती। खिड़की में बाहर की तरफ की सिटकनी को देखा-सुना नहीं गया था। खिड़की में बाहर साँकल भी नहीं लगाई जाती थी। अन्दर से बन्द दरवाज़े का मतलब कि कोई चुपके से न घुसे। दरवाज़ा खुलवाने के बाद घुसे।

बच्चों का देर से स्कूल आने का कोई ज़रूरी कारण होता था। स्कूल डरावनी जगह नहीं थी। स्कूल जाने में बच्चों को डर नहीं लगता था। रात में भी नहीं। स्कूल से बच्चों की इतनी आवाज़ें आ रही थीं कि स्कूल शाम को पेड़ लग रहा था। और सोने के पहले पतरंगी का गुल-गपाड़ा था। यद्यपि रात हो चुकी थी।

हाँफता हुआ छोटू गोल स्कूल पहुँचा। बच्चों की भीड़ में किसी एक को पहचान पाना कठिन था। बोलू अपनी कक्षा के सबसे ऊपर वाले आले में खूण्टी पकड़े खड़ा था। देख कर लगता था कि कहीं खो गया है। छोटू के "बोलू-बोलू" चिल्लाने को वह सुन नहीं रहा था। छोटू ने फिर बोलू को पहले बोलू की आवाज़ में पुकारा। वह सुनता भी कैसे। एक तो वह खो गया था। दूसरे अपनी आवाज़ वह तब सुनता है जब वह किसी से बात करता है। बोलू तब सुनेगा जब वह बोलकर अपने को "बोलू" पुकारे। या वह अपना नाम बोलू किसी को बताए। इसके बाद छोटू ने प्रेमू, फिर कूना, फिर गुरूजी की आवाज़ में बोलू को पुकारा तो पूरी कक्षा में सन्नाटा छा गया था। या छोटू ने जो अपने को खो दिया था, तब अपने को पा लिया हो। बोलू ने गुरूजी की आवाज़ की तरफ जब छोटू को देखा तो प्रेमू की आवाज़ में छोटू ने बोलू को अपने पास बुलाया। उसने बोलू के कान में बोलू की आवाज़ में ही बताया, "भैरा मुरम की खदान में गिर गया है और निकल नहीं पा रहा है।" फिर सभी मित्रों को कान में उन्हीं की आवाज़ में भैरा के गिरने की बात बताई। जैसे, कूना को कूना की आवाज़ में।

स्कूल की भगदड़ की आड़ में सबके सामने ये लोग निकले। इनसे किसी ने कुछ पूछा भी नहीं। भैरा के पास पहुँचने की जल्दी में बताना भी भूल गए। तभी बादल ने उनके मैदान के पार होने तक चन्द्रमा को छुपा लिया। धुँधली छाया के झुण्ड की तरह ये थे। बादल के कारण सबने इन्हें अनदेखा किया, चन्द्रमा ने नहीं। मैदान के पार होते ही चन्द्रमा बादल से निकल कर इनके साथ हो लिया। जहाँ ये ठिठक कर रुकते चन्द्रमा भी रुक जाता। दौड़ते-दौड़ते कूना ने कहा, " भूल गए घोड़े को ले आते।"

बोलू सबसे आगे था। वह दौड़ने के लिए गाने लगा था- "भागो-दौड़ो छू लो जाओ। कोई किसी के पीछे न हो। कोई किसी के आगे न हो। साथ भागो। साथ पहुँचो। पहुँचने में देर न हो। साथ चलो भई साथ चलो आगे वालों के साथ चलो। छू हो जाओ। उड़न छू हो जाओ।" बोलू इतना हल्का हो चुका था कि उसे पता नहीं चला कि दौड़ते-दौड़ते धरती को छोड़ वह हवा में है। जबकि उनके साथियों को लग रहा था कि बोलू तेज़ दौड़ रहा है। सभी को लग रहा था कि हवा उन सबको पीछे से ठेल रही है। और सभी तेज़ दौड़ रहे हैं।

बजरंग होटल का भजिया बनाने वाला उसी तरह दौड़ रहा था जैसे उसे छू कर दिया गया हो। उसे दौड़ना ही याद रहा। दौड़ कर कहाँ जाना है वह भूल गया। जब वह मुरम की खदान से आगे निकल गया तब उसे याद आया कि मुरम खदान जाना है। वह लौटा। वह थक चुका था इसलिए धीरे-धीरे लौटकर सुस्ता रहा था। उसे अपने पीछे किसी के आने का आभास हुआ। दबे पैरों से आ रहा था, ताकि पत्तों की चरमराहट की आवाज़ कम हो। वह भी दबे पाँव चलने लगा। वह चाहता था कि उसके चलने से पत्तों की आवाज़ न हो, जिससे वह पीछे चलने की आहट को साफ सुन सके। जब भजिया बनाने वाला पैर रखता तब उसका पीछा करने वाला पैर रखता। जब वह रुकता तो पीछे वाला भी रुक जाता। इतने में चन्द्रमा बादल में छुप गया। अँधेरा बढ़ गया। भजिए बनाने वाले को क्या पता कि इसी समय बोलू के साथ उसके मित्र स्कूल से निकल कर मुरम की खदान की ओर चल पड़े हैं। और चन्द्रमा उनकी सहायता कर रहा है। आवाज़ न हो इसलिए भजिया वाले ने अपने प्लास्टिक के कड़े तल्ले के जूते उतार लिए। और हल्के पैरों से चलने लगा। इस बार उसे लगा कि पीछे दो लोग हैं। या ऐसा एक हो जिसके चार पैर हों। वह डर गया कि उसके पीछे कहीं शेर तो नहीं।

नंगे पैर होने से सूखे पत्तों के स्पर्श को महसूस कर रहा था। अब उसके चलने से पत्तों की आवाज़ कम हो गई थी। परन्तु जो पीछे आ रहा था अपने गद्दीदार पैरों से आ रहा था और वह पहले से पास आ गया था। भजिया बनाने वाले ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा था। उसे डर था कि वह मुड़ कर देखेगा तो वह शेर होगा। और मुड़कर नहीं देखेगा तो शायद शेर नहीं होगा।

जारी...